भावनात्मक कर्म

ख्वाब हो तेरे शायद शीशे के

बुलंद रख फिर भी तू अपने इरादे...

इक ना इक दिन तो हकीकत होंगे ये

कोशिश तू अपनी सदा रख जारी...

इन छोटी-मोटी हार से मायूस ना होना

यह तो काँटे हैं जीने की राह के...

जीत न होगी कभी अच्छे या बुरे की

यह तो कदम चूमती है सच्ची भावना की...